253
906 (P)
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1323/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 906

891.43
V191V

* ओ३म् *

वैद्य की लचारी

ले०—पं० रामकुमार उपाध्याय वैद्य
ग्रा० इजरा पो० जलालपुर, जौनपुर ।

जनवरी सन् १९४० ई०

प्रचारक—
पं० महादेव प्रसाद भजनीक
पं० राजाराम मिश्र मई

प्रथम बार
२०००

सर्वाधिकार
सुरक्षित

मूल्य चार पैसा

प्रकाशक—
पं० रामकुमार उपाध्याय वैद्य
मुद्रक—
गजराज सिंह कल्याण प्रेस, जौनपुर ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 906
Date 24-12-71
GOVT. OF INDIA

दो शब्द

पं० रामकुमार वैद्य काँग्रेस के एक उत्कट एवं निःस्वार्थी कार्य्य कर्त्ता हैं आपके मधुर, भावमय तथा प्रभावोत्पादक गानों ने जनता के हृदय पर ऐसा प्रभाव डाल रक्खा है कि लोग वैद्य जी का नाम सुनकर सभा में दौड़ पड़ते हैं। प्रस्तुत पुस्तक आपके देहाती गानों की संग्रह है इस पुस्तक में आपने अपने कुछ गानों का जिसमें लचारी, कहरवा, बिरहा आदि गाने हैं जनता की आग्रह से छापा है मैं वैद्य जी को इस कार्य्य के लिये बधाई देता हूं और जनता से प्रार्थना करता हूं कि प्रस्तुत पुस्तक अपना कर लाभ उठावें।

जौनपुर
१३—१—४०

गजराज सिंह

IMPERIAL RECORD Department
Rec. 5 22.2.43

* ओ३म् *

वैद्य की लचारी

* दोहा *

अन्नदान दाता बने, आज दरिद्र महान्
देखा दशा किसान को, दीनबन्धु भगवान्

(१) होते न किसान तो समान आज कहाँ होति न।
कैसे लगवतेन साहु गोला में बजरिया॥
कैसे गुरु बाबा सढ़िआरै आज दूध पबतै।
कहाँ पुरोहित अवतै बांध के गठरिया॥
कैसे हारमोनिया औरो तबला सितार बाजत।
कैसे बीबी गवतिन चढ़ि के ऊंची अटरिया॥
कैसे रानी साहबा सबेरे जलपान करतिन।
कैसे राजा ओढ़ मंगतेन लै लै मोटरिया॥

कवित्त

(२) कैसे उपदेशक उपदेश करते खड़े खड़े।
कैसे सम्पादक आपन भेजतेन खबरिया॥
कैसे पुलिस वाले भइया सान औ गुमान करतेन।
केकरे दुआरे पवतेन लवकी औ लकड़िया

कैसे वकील बिना खेले वकालत करतेन।
कैसे जमींदार साहब मंगतेन नजरिया॥
कैसे पटवारी बोमल जोन्हरी कै जुवार लिखतेन।
कैसे पेटरौल साहब खोलतेन नहरिया॥

किसान न रहने पर तब क्या होगा

(३) खाय जैहैं मोरचा मशीन कारखाने कै,
जैहैं झुराय मील मालिक कै तोंदरी।
माल गाड़ी टेशन पर खड़े खड़े सीटी दैहैं,
ऊख वाली मील में लगैहैं जाला मकरी।
बुति जैहैं भट्ठी हलुवाइन कै मिठाई वाली,
एक न भण्डारा होइहैं बाबा की नगरी।
वैद्य कहैं चूहा कठौती में डण्ड करी,
छोड़ के कहार भगिहैं लाला की नोकरी।

(४) ओगन कै पाछा झुराय जैहैं दाना बिना,
दैहै ना उधार ना फिर लैहै उत छमाही।
बड़े बड़े पूंजी पती नोट वाले लोट जैहैं,
ढिल होइहैं घड़ियाँ जब चिचुक जाई कलाई।
भाग जैहैं हाकिम कचहरी में सियार बोली,
सुवलै किसान केसे होइ हैं अब लड़ाई।
वैद्य कहैं हमहूं औ डाक्टर बिदेश जाबै,
रहिहैं न किसान तब के करिहैं मोर दवाई।

लचारी ।

लगली बजार हो पहरुवै बिना लूट गइलिन ।
अनधन सोनवां वोदेसी भैइयालूटलेगै ॥
दाना बिना होइ गैइलें देशवा भिखार हो ॥ पहवै०
बल बुद्धि विद्या ज्ञान गरिमा विदेश गइलें ।
हिजड़ा की नैइयां बैठल बनवै सिगार हो ॥ पहरुवै०
आज जो बिदेसवा से आवैना कपड़वा भइया ।
माई बहिनियाँ तोहरी रहिजैहैं उघारि हो ॥ पहरुव०
कहां गये भीम कहां गये अर्जुन
कहां गये अभिमनु बांके जूझार हो ॥ पहरुवै ०
कहवां चौहान कहवां राना प्रताप गइलें ।
घसिया कै रोटी जिनके जीवन अधार हो ॥ पहरुवै०
भारत कै देवी झांसी रनियां कहाँ गइलिन ।
पिठिया पर बांधे आपन राज कुमार हो ॥ पहरुवै०
देशवा के कारन केतने गइले काले पानी भइयो ।
फंसिया पर झूले भगत सरदार हो ॥ पहरुवै०
वैद्य कहै निंदिया से जागा भारत बासी भइयो ।
हो गये विदेसियन से देसवा उजार हो ॥ पहरुवै०

लचारी ॥

सबसे किसान हो अभागा हमरे देशवा में
इनही जोताई करै इनही बोआई करै
तबहूं बेचारे रोज मरै लै भुखान हो ॥ अभागा ॥
दिनभर बेगारी रहैं लाखनठे गारी सहैं ।
तबहूं न लागै इन्है खाये कै ठिकान हो ॥ अभागा ॥

हाकिम इनसे पोत माँगे मेम्बर इन ते ओट मांगै ।
बाबा दुवारे मांगै दाल औ पिसान हो ॥ अभागा ॥
देवता कराही माँगै लकड़ी सिपाही माँगै ।
गंगा के तीरे मांगै पण्डा इनसे दान हो ॥ अभागा ॥
गुरु बाबा पूजा मांगै लाला इनसे भूसा मांगै
माता भवानी माँगै चुरकी औ कान हो ॥ अभागा ॥
खंसी भेड़ा दुर्गा माँगै गाजी मियाँ मुर्गा मांगै ।
अमला वकील कहै छोड़ देव इमान हो ॥ अभागा ॥
ओझा देखाई माँगै भड़वे बिदाई माँगै ।
बीबी बुलावै सुनला बढ़िया २ तान हो ॥ अभागा ॥
गाजा वैरागी माँगै दुई कै नौ पञ्जाबी मांगै ।
वैद्य कहैं ईश्वर बचावा इनकर जान हो । अभागा ॥

सोहाग

(२) मसीह बाबा आपन सेना बटोरा ।
कोठी के डोकी में जेवना परोस्यों ।
सोने कै थारी उठाइ ले गयल चोरा ॥ म०
सोने कै थारी विदेसवां में चल गयल ।
हमैं मंगाय दिहेन टीन कै खोरा ॥ म०
चूनि चूनि कलियां पै सोवैं विदेसिया ।
हमैं बिछाय दिहेन पत्थर पर बोरा ॥ म०
सोने कै सिक्का विदेसी मे चलि गयल ।
हमैं थमाय दिहेन कागद कोरा ॥ म०
बैद्य कहै हमैं कुछो नहीं छोड़ेन ।
सरवस उठाय ले गयल भरि २ झोरा ॥ म०

लचारी।

(१, बहु दुख पाये बिदेशियन के रजवा में।
आग औ पानी माटी हवा बिकाय जहां।
न्यायन मिलै हो बिना पैसा लगाये॥ बिदेसियन॥
कल कारी गारी हमरे देस से उठाय ले गयेन।
केऊना बच्चा जिनके नाहीं सताये हो॥ बिदे०॥
सर्वस बेच के लगान न दियाय भइया।
लाखो किसान मरै हो बिना खाये॥ बिदे०॥
हीरा जवाहर सोना सागर उतार अइलै।
कागद कै नोट लेके जियरा बुझाये॥ बिदे०॥
वैद्य कहैं भारत कै देसवा भिखारी होइ गये
समय चूकि पुनि का पछताये बि०

Folk Song

लचारी पछुवही

होये अब का मोरी डिग्रीया में वकील साहेब
कहवां कै चाको बनि कै आयेन काँग्रेसी रामा।
पहिले लगाइन महाजनी पर दाव॥ मोर डि०
अगले बिधान में निलाम नहीं होये रामा
सुनि सुनि के होतबा करेजवा में घाव हो॥ मोर०
एक मिली कै खेत मोरे दुवारिया पर रहा साहेब
यही खाती करता रची कौनों उपाय॥ मोर०
डिप्टी कलक्टर तहसीलदार औ अमीन थानी
सब मिल कै खेवैं कांग्रेसियन कै नाव भर
वैद्य कहै भारत कै देसवा उजार होजाये
छोड़ा महजनों अब राती कै भाव॥ मोर०

बिरहा

फेंके गांधी बाबा पासा टूट गये मनिस्ट्री के आसा।
कितने कादर टोपी धै दिहलैं उतार
लोगेन दिल में सोचै हो गये देस कै सफाई
गइलैं कांग्रेसी फिर गये लाट कै दोहाई
लागी जब चौवालीस जावै घरवा में लुकाई
होई जेहि दिन सभा वहि दिन चल आवै नताई
घर जैहैं जब नेता तब हम कर देवै गवाही
मिलि के चुगुल खोरन से बजैबे सहनाई
वैद्य कहै इन तो हउनैं मान सिंह कै भाई
केतने कादर टोपी धै दिहलें उतार
इनके भरोसवा स्वराजवा न मिलि है पंचौ
इनसे सभन रहिहा होशियार।

बिरहा

उठा किसानौ भइया तोहरी बीच भंवर में नइया
अपने हाथ में सम्हारा पतवार।
जब कप्तान कहै कांग्रेसी लखिला खूब इशारे से
बूड़ै नाव हलुकावा भइया जल्दी कइके भारे से
हरी बेगारी औ घुस खोरी बाँधा ओट के नारे से
पूंजी बाँध भंवर में छोड़ो जी बच जाय उधारे से
बीबो भोड़ वीच में फेका भेट करै घरियारे से
बढ़ै नाव जब डकै भंवर तब पूछो तालुकदारे से
और केतिक नजराना चाही हम गरीब के हाड़े से
इनकर खबर लिहा लेकिन अहिन्सा के हथिआरे से
वैद्य कहै जब पार लगै तब प्राण बचै हत्यारे से

हो अपने हथे में सभाग पतवार
राजा नवाब हमकं बहुतै सतायेन भइया
अवहुं से करैं जब सुधार

बिरहा

कहै किसान कै नागी सैइयां खूब कइला होशियारी
दं के भेजे कांग्रेस्लियन के राय।
परदेसी के रजवा में कुल देहले गवाँई हो
सौ सौ बरस बीत गै लेकिन बढ़ो जाय दुख दाई हो
बड़े फेर से कौंसिल बैठल गांधी किहेन सहाई हो
राजा बाबू से राय सब तोहसे लिहेन चुनाई हो
चौदह बरस रहेन कौंसिल में एइ कर दिहेन बढ़ाई हो
नवा २ कर रोज बढ़ै तब नेता दैयं दोहाई हो
अब की बार गयन काँग्रेसी गहना परल खटाइ हो
धारा एहर उलटि कै बन्धिहैं तब उनके समझाई हो
अपने तनमें नस्तर लागी तब पीड़ा जनाई हो
बैद्य कहै अब बिल में घुसुरै भूल गयल चतुराई हो
देकै भेजा काँग्रेसन के राय
तोहंके राम राम दोहइया इनकर संग जिन छोड़ा सैइयां
इनहीं करिहैं तोहरे देसवा कै सहाय

बिरहा

सुनो हो किसान तू भारत के भगवान भइया
तोहरो कमाई सब खाय
तोहई से चले राजा बाबू कै मोटरिया
तोहई से फूटल मील मालिक के तोदरिया

तोहई से मांगै जिमीदरवव नजरिया
तोहई से मुन्शी औ दरोगा कै नोकरिया
तोहरी कमाई से वकील कचहरिया
तोहई से वैद्य और हकीम डाक्टरिया
तोहरे दुआरे बावा बांधै लेन गठरिया
तोहई के देलै गुरु बाबा मंतरिया
तोहरे जघे के लाला लिखलै बेझरिया
तोहरे सौदा से जियै दलाल ब्योपारिया
तोहरे बदे के खुलल पानी कैनहरिया
तूही लेय बिधवा अनाथ कै खबरिया
वैद्य कहै तून होतो तब मुह होयजातै करि ।
भइया तोहरी कमाई सब खाय
अपूना खालै पूड़ी मिठाई तू मटरे कै फुट्टा
अपुना ओढै सिलिक चदरिया तू कमरे का टुक्का
ताजा हलुआ इनकर होवै न पावै अब
बरतै चुल्हा अब दिया बुताय

कहरवा

अइलै इहां बनरा मचवलै घरवां झगरा
बदल गइलेन ना हमरे देसवा कै चलनियाँ बदल० ॥
बुढ़ऊ के संग सात बरस कै लड़का तरनी पावै
गन्या गने ज्योतशी बाबा दूनों खूब बतावै
कैसे मिलवै पन लगनियां बदल० ॥
चीनी में हाड़ दवा में दारू घी में चर्बी खावैं
पहर चमार चढ़ै जौ कुंवा धरम २ चिल्लावै
वोन भरै न पावै पनियाँ बदल० ॥

रात भर कुकुर हाड़ चबावै हौदा कै गुड़ खावै
आधो दूध बिलरिया पीवै आधा बाबा भोग लगावै
फैरे मलवा कै मनिया बदल० ॥
बैद्य कहै कुल लेगय बिदेशी हमैं बनवलस परमभिखार
बेटवा बनल मील कै कुल्ली बाप गाँव कै लम्बरदार
हो गइ इहै जियरा कै जरनिया बदल० ॥

सोहाग

बोरेन बिदेसी मझे धरवै में नइया हो
आना मन कै गेहूं मिलै छ पसेरी कै घीयना हो
तीन आना के बरदा मिलै दुइ आना के गइया हो। बोरेन ॥
बड़े २ आई एस करोड़ों तनखाह लेवै
हमसे बतावै इनहो न्याव कै करैइयाहो। बोरेन ॥
हीरा जवाहिर सोना सागर उतार अइलै
खाये न पाई आपन गाढ़ो कमइया हो। बोरेन ॥
कतने सपूतवन के फांसी लटकाय देहलै
केतने तो भोगै काले पानी कै सजइया हो। बोरेन ॥
पुलिस के मुसन्डे लूटै रन्डी औ पन्डे लूटै
लूटै दलाल सारे घरही कै भइया हो। बोरेन ॥
बैद्य कहैं धोखवै कै नइया बनी है जेनकी
स्वारथ कै डाँड़ बैठल पापी खेवइया। बोरेन ॥

कजली

कइ नवलेस बिदेसिया खुवारी, होय कायेसिया कैरजव।
मुर्गी औ घास हम दिनवा भर ढोई
दुवारे कै खटिया उठाय लेगै, बचै न बेढ़उनी तरकारी। होय।

सोरह सेर कै चुनी चोकर दुई सेरे के घोयना
बारह सेर के पिसना बलमुवाँ दाम मांगे पावैं सौ सौ गारी
फटही लुगरिया के जिनगी भर तरसी
पेटवा के दनवां न पाई सैइयां जीके नाव लम्बरदारी। होय।
पुलिस सतावै जमीनदार सतावै हो
करिन्दवा कै माननही मटके औरो सतावै पटवारी। होय॥
वैद्य कहै जब से बिदेशी यहां अइलै
मकुनी कै रोटियो दुलम भइली
भूल गइली हलूवा सोहारी होय कायेसो कै रजवा

कोहरवा

सिखावैं ठगहारो अइलै परदेसिया। सिखावै
आये थे रोजगार करन के बेच २ मलवा बने हो रोजगारी। अइलै॥ थोड़ी सो फिर फौज बनाये कहैं जान माल कै करी हो रखवारी। अइलै०॥ कतने ओलाहन कै करगह उजार देहलै, कितने के अंगुठा पै चल गइली आरी। अइ०॥ केतने सपूतन फांसी पर चढ़ाय देहलेन, तोड़ २ रजवा बनावें जमींदारी। अइ०॥ रांड़ पिसनहरियन कै बन्द कइलै रोजी, पीसै बदे अटवा मशीन कइलै जारी। अइ०॥ भारत बासी के मड़ई दूलम भइली, बनि गइलैं बिदेसवन में सोने कै अटारी। अइलै०॥ घी दही दूध हमैं सपना बनवलैं, बिसकुट बरन्डी औरो चाह अधिकारी। अइ०॥ वैद्य कहैं चार ज़ने मजा उड़ावैं राय साहब, रण्डी, औ पुलिस पटवारी। अइलै०॥

गाना

हे प्रभो इस देस के हित जतन लाखों कर चुके हैं
पदमनी दुर्गावती मीरा लसमी बाई देलेर
वतन हित नाना की मैना आग में भी जर चुके हैं
लाल गुरू गोविन्द के जलिया में मदन गोपाल जी
राजपाल अनाथ जैसे पोखरे में तर चुके हैं
गोखले दादा तिलक मोहन वो लाला लाजपत
मालवी मोती जवाहर जेल लाखों भर चुके हैं
अन्न जल बिन दो महीना फूल से मुरझा गये
बोरिया का बिस्तरा पत्थर सिराने धर चुके हैं
राम प्रसाद आज़ाद रोसन हो चुके कुर्बान हसेन
भगत सिंह सरदार तन को टुकड़े २ कर चुके हैं
हर किशुन अस्फाकउल्ला राज गुरू सुखदेव जी
झूलकर फांसी पर झूला देस के हित मर चुके हैं
अम्बरीक जसपाल बटकेसर औ मनमथ राय से
मौत से लड़ने गये लेकिन वह दुशमन डर चुके हैं
हैं पड़े निरवास में कितने महेन्द्र प्रताप से
फूल से अरबिन्द कितने कन्दरे में सर चुके हैं
वैद्य कहते देश के हित मर चुके कितने हज़ार
फिर अज़ादी के लिये साँचे में लाखों ढर चुके हैं

कवित्त

विक्रम औ भोज नौशेरवां नोसिरुद्दीन,
अकबर असोक आज भारत से चले गये।
आये बिदेशी विजातो बिधर्मी यहां,
कितने अमोल रत्न खलों से खले गये।

न्याय के नाम पर अन्याय सारी करते रहे,
कोमल २ कुसुम अकाल से मसले गये।
रोता है बागवाँ जवाहिरी कपार पीटे,
भोले भारतवासी भूरी आँखों से छले गये।

कवित्त

गेरुई गिरदावर और चरका चपरासी बने।
पाला बड़ा लाला जवन लूट २ खाते हैं
माँहो महाजन बड़ी लम्बी चौड़ी तोंद वाले
पाथर पुलिस बड़े प्रभुता जमाते हैं
मूस हैं मुहर्रिर मूंस मूंस घूस लेते जांय,
कौवा तहसीलदार हौवा बन के आते हैं
कहूं का किसानन की हाल ये पिसान भये।
खेत हेत इनके केते प्रेत मेड़राते हैं।

लचारी

आजादी बदे होय गइलै लाखो दिवाना हो। आजादी
दुर्गा दास औरो वीर शिवा जी हो,
बन २ फिरे मारे उदयपुर के राना। अजादी
दुर्गावती आगे झांसी की रनियां हो,
जल गई बेटी औ चले गये नाना। अजादी
चारो बेटे बहादुर शाह के हो,
नन्द कुमार असफा कुलसा मस्ताना। अजादी
श्रीकृष्ण शारदा मलापा धनसेठी भइया
जगरनाथ सेंधी कुर्वान हुसेन मर्दाना अजादी
कितना गिनाऊं वही जलियाँ की बगिया में,
मदन गोपाल बदे मारे निशाना। अजादी
बिस्मिल अजाद कन्हैया लाल रोशन,

दास यतेन्द्र मरे बिना दाना। अजादी
राजगुरू सुखदेव भगत सिंह,
राजेन्द्र लहेड़ी हरकिसन भये कुर्बाना। अजादी
लाजपति राय हमरी लठिया से मारि गइलें
घर कै पुलिस मोर हो गये बेगाना॥ अजादी
मोती लाल तिलक नौरोजी हो
महीन्द्र प्रताप अरविन्द कै कहां है ठिकाना अ०
वैद्य कहैं देशवा कै लजिया बचावै बदे
शमा है स्वराज्य हम बनैंगे परवाना हो अजादी

कहरवा

सजनी हो वहि देशवा पै गाज परै, जेहि देश में राज बिदेसी करै। जौं करि देय तौ माटी मिलै, कर देय तबै कल पानी भरै। चारौं ओरियां हो कर लागि रही, कर देय तब चूल्हवा में आग बरै॥ जेहि० नगर बसै तबहूं कर देय, कर देय जौ करेउ व्यापार करैं, खेती करै तबहूं कर देय, कर देय तब दाली मे नून परै। जेहि०॥ विद्या पढ़ै तबहूं कर देय, कर देय तब हाकिम न्याय करे, जियत भर कर लागि रही, कर देय तब मुअले पर लाश जरै। जेहि०॥ मूड़ मुड़ावै तबौ कर देय, कर दय जब कुली कै काम करै वैद्य कहै कर से कर नाहीं कर सुन के किसनवां कै जियरा डरै। जेहि देशवा में राज विदेशी करै॥

लचारी

हरा भरा देश हो भिखारी भइलै धोखवै में
असन वसन बिन भोग रहे हैं भइया
निस दिन सहते हैं परम कलेस हो। भिका०॥
वनिके अतिथय धरिके साधू रूप आये यहां

चोलगां के नीचे छिपाय रहे भेख हो। भिखा० ॥
टुकड़ा के आय थे रसोइया के मालिक भइलै
पढ़े बदे आय थे सुनावै उपदेस हो। भिखा० ॥
अमला सरकारी लुटैं पडा पूजारी लुटैं
बाबा बपुधारी जिनकी लंबी २ केश हो। भिख।० ॥
भड़ुंवा औ रंडी लूटैं सारे पाखंडी लूटैं
राजा नवाब जिनके बड़ २ पेट हो। भिखा० ॥
लाला पटवारी लूटैं लाखन भिखारी लूटैं
बैद्यऊ के जियरा में बहुत अन्देस हो। भिखारी० ॥

लचारी

सतावा जिन गरीबवन को होय जावा खुवार हो
सब दिना होत न एक समान भइया
जालै समइया फिर आवै बार २ हो। सत०

कवित्त

एक दिना श्री कृष्ण भागि गये आघोगत
एक दिना कंस को पछारेया एक छन्ह में
एक दिन रावन ने दसो दिशा जीत लायौ
एक दिना दसो शोस काटे गय रन में
एक दिना पारथ ने भारत को जीत लियो
एक दिना भिल्लिन ने लूट लियो बन में
एक दिना हरीश्चन्द दुनिया के राजा रहयो
एक दिना चिता की लगाई खाक तन में

लचारी

तोहऊ बुढ़वा तोहऊ रोगी होइ के मुअवा भइया
तोहऊ सहाय बदे रोयवा बार बार हो। सतावा०
रहिन बिदेसिन कै सहारे बोल बाला भइया

चल जइहैं विधर्मी एक दिन समुन्द्र के पार हो ।सता०
पाप कै गगरिया जब भर जाई तब छलको भइया।
चूलेह में चलि आई विसेशा अधिकार हो । सता०
बैद्य कहैं सोचिहैं किसान जब मसान अपन
कुछ न सहाय करिहैं मुखिया लम्बरदार हो

सोहाग

जागा बलमुवां गांधी टोपी वाले आई गइलैं
शकर जगवलें तोह के गौतम जगवलें संइयां
स्वामी दयानन्द जहरवा लेइ के खाय गइलैं जा०
राणा प्रताप बहुभांति जगवलें संइयाँ
सारी उमरिया आपन बनमें बिताय गइलें जा०
आयल सत्तावन झांसी रनियां जगवलैं तोहके
नाना बाजीराव धइके बहिया उठाय गइलैं जा०
सातै सुपेती जिनके मखमल कै करेर रहली
तोहरे कारन जेलवा में बोरवा दसाय गइलैं जा०
तोहरे जगावै बदे तोपिया के आगे संइया
मदन गोपाल आपन छतिया लड़ाय गइलें जा०
तोहरे जगावै बदे कितने माई के लाल
देसवा छुड़ाय काले पानी मैं बसाय गइलैं जा०
राज गुरु सुखदेव भगत सिंह हो
तहरे जगावै बदे फांसी पर चढ़ाय गइले जा०
बैद्य कहै सूते में असेमली कै ओट अइलैं
सेरन मिठाई हमरे रजवा कै खाय गइलैं जा०
इसा मसी आपन सेना बटोरा बाबा
फल फूल खयलै डरिया तोर के गिराय गइलैं जा० ॥

लचारी

घरही कै भायहो बेगाना हमसे होय गइलै न ।

सोने कै लंका भइया माटी में मीलाय गइलै

भेदवा बिभीषण जब देहलै बताय हो । बेगाना० ॥

क्षत्रिन कै शान जेचन्द माटी में मीलाय देहलन ।

गजनी से गोरी के ले अइलन बोलाइ हो । बेगाना ॥

राणा प्रताप के घुमवलै भइया बने बने

मानसिंह बन गइलै दुलहिनी के भाय हो । बेगाना० ॥

झाँसी कै रानी अपनी पिठिया पै बलकवा बाँधै

छका बिदेसियन कै देहलिन छुड़ाय हो । बेगाना० ॥

भारत कै देवी अपनी देश पै कुर्बान भइलीन

नाना कै बेटी गइलिन जियतै जलाय हो । बेगाना० ॥

घरहीं कै चेला भइया स्वामी दयानन्द जी के

दुधवा में देहलेन जहरवा मिलाय हो । बेगान० ॥

सात जने मिल के भारत बगिया उजाड़ै भइया

सतहुन कै नउवाँ बैद्य देइहै बताय हो । बेगाना० ॥

राय साहब, रन्डो और भिखमंगा, नशाखोर, सारे

पन्डा, पटवारी, औ दरोगा, गइलै खायहो

बेगाना हमसे होय गयलै । घरही० ॥

लचारी

देशवा कै होयगै खुवारी बलमु

लंबरदारी में भूल गइलै

हाथी बिकाय गयेन घोड़ा बिकाय गयेन

गिर गइलै कोठा अटारी । बलमु०

अन धन सोना बिदेशी उठाय ले गइलै

हमै के बनायेन भिखारी ॥ बलमु० ॥

गहना बिकाय गयन बरतन बिकाय गयन

फटि गइलै तनपै कै सारी बलमु०

IMPERIAL RECORD Department

छोटे २ लड़का अहार बिना तरसै
अपुना हौलात तहसीदारी। बलमु०
अगिया लगावो बिदेसिया क रजवा में
बज्जर परै अइसन जमीनदारिन ॥ बलमु० ॥
भारत के दुखवा कहै जमीनदारी
बैरी के बनि गई भिखारी। बलमु० ॥

कहरवा

भयलै परदेसिया लगवलै गरवां फसिया
बिदेसिइया से ना देसवा होयगय मोर भिखारी यहि बिदे०
दसलेखे कै पोत लगवलै तवनेपर नजराना
आधे माधे पाथर परिगैय गायब हो गय दाना
तेहिपर हरी औ बेगारी। यहि बिदेसवा० ॥
सारा जीवन बीत गयल नहिं पांव में पन्हीं पाये।
कोट फीस तलबाना दे के दिन भर पैदल धाये ॥
अपुना मोटर कै सवारी ॥ यहि बिदे०
जीवन धन कुर्बान करौलेन जर्मन की लड़ाई।
रौलट बिल कानून बनाय के कइलै मोर बिदाई ॥
होय गय देसवा में जारी (यही बिदेसियो
गये हजारों कालेपानी लाखों जेहलखाना
माता बहिनघसीट ल गइली पुलिस करै मनमाना
खींचे देहियां पर कै सारी। यही बिदे० ॥
परकृति पर टिकट लगवलैं बेचलेहेन पाखाना
जेमाटी कै नून बनावै धै २ चेचा तोना
डरिया ४४ कै भारी। यहि बिदे० ॥
हाड़ पीस के चीनी कइलै चर्बी कै घी ताजा
वैद कहै भगवान बचावै बड़ा अधर्मी राजा
हो गय भारत कै खुवारी। यहि बिदे० ॥

किसानों का स्वराज्य

नया काश्तकारी कानून

देहाती बोल चाल में

यू. पी० की काँग्रेसी सरकार ने अपने ढाई साल की कठिन परिश्रम से आज सूबे के किसानों के लिये ऐसा कानून बना दिया जिसे समझ लेनेसे हमारे गरीब किसान भाइ जो सैकड़ों साल से जमींदारों की चक्की में निरन्तर पिस रहे थे कुछ अच्छे दिन का अनुभव करने लगेंगे। लेकिन कानून की भाषा इतनी कठिन होती है कि उसको समझना बहुत मुश्किल है। कानून के अर्थ को समझाने और समझ कर उचित न्याय करने के लिये जिले २ में छोटी बड़ी कचहरियों के अलावा सूबे में हाईकोर्ट और चीफकोर्ट कायम हैं जिसमें काबिल से काबिल बैरिस्टर, वकील मुख्तार तथा न्यायाधीशों के दिमाग़ चक्कर लगा रहे हैं। अतः हमने इस नये कानून का अनुवाद आम बोल चाल में सवाल जवाब के रूप में वकीलों से अनुवाद कराया है जिसे पढ़ कर थोड़ा पढ़ा लिखा भी इस कानून से लाभ उठा सकता है। यह पुस्तक लड़ाई के कारण कागज बहुत मंगा होने पर भी तीन आने की मिल रही है। छपने के चार दिनके भीतर ही एक हजार बिक गई। जिस कानून के समझने के लिये वकील मुख्तारों के पास भटकना पड़ता था और पानी की तरह रुपया बहाना पड़ता था उसे समझने के लिये केवल तीन आने की एक पुस्तक काफी है। अतः प्रार्थना है कि हमारे दिहाती भाई इसे पढ़ कर अपने अच्छे दिन का अनुभव करें।

गजराज सिंह

कल्याण प्रेस, जौनपुर।